सूरह — एक कहानी

सूरह अत-तलाक़

तलाक़

पूरा सफ़र — सबसे सख़्त घड़ी में भी इज़्ज़त —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 65 • 12 आयतें • मदनी

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

या अय्युहन्-नबिय्यु इज़ा तल्लक़्त्तुमुन्-निसा-अ फ़-तल्लिक़ूहुन्न लि-'इद्दतिहिन्न
1. ऐ नबी! जब तुम औरतों को तलाक़ दो तो उन्हें उनकी इद्दत के वक़्त पर तलाक़ दो।

व मंय्-यत्तक़िल्-लाह यज्'अल लहू मख़्रजा
2. और जो अल्लाह से डरता है, अल्लाह उसके लिए निकलने का रास्ता बना देता है।

व यर्ज़ुक़्हु मिन हैसु ला यह्तसिब
3. और उसे वहाँ से रिज़्क़ देता है जहाँ से उसे गुमान भी न हो।

व मंय्-यतवक्कल 'अलल्-लाहि फ़-हुव हस्बुह
3. और जो अल्लाह पर भरोसा करता है, वो उसके लिए काफ़ी है।

स-यज्'अलुल्-लाहु ब'अ्द 'उस्रिंय्-युस्रा
7. अल्लाह तंगी के बाद आसानी पैदा कर देगा।

क़द अन्ज़लल्-लाहु इलैकुम ज़िक्रा
10. अल्लाह ने तुम्हारी तरफ़ एक नसीहत उतारी है।

टूट जाने वाले लम्हे की सूरह

बेटा, इस के लिए क़रीब बैठिए, क्योंकि ये वो चीज़ सिखाती है जिसकी लोग एक हिदायत की किताब से शाज़ ही तवक़्क़ो करते हैं।

इस सूरह का नाम उस सबसे सख़्त घड़ी पर है जिसका कोई ख़ानदान कभी सामना करता है — **तलाक़**। और पहला सबक़ ख़ुद इस नाम में है: इस्लाम दर्दनाक हक़ीक़तों से मुँह नहीं मोड़ता या ये दिखावा नहीं करता कि वो मौजूद ही नहीं। वो **उनके अंदर** चलता है, नूर लिए हुए, और ठीक वहीं इज़्ज़त का क़ानून देता है जहाँ इंसान अक्सर उसे खो देते हैं।

क्योंकि ईमानदारी से सोचिए, बेटा: लोग अपने सबसे बुरे रूप पर कब पेश आते हैं? जब एक शादी बिखर रही होती है। तभी ज़ुबानें छुरियाँ बन जाती हैं, ख़ानदान इस में घसीट लिए जाते हैं, बच्चे हथियार बन जाते हैं, सालों की साँझी ज़िंदगी एक अना की

शाम में जला दी जाती है। और ठीक **वहीं** अल्लाह एक सूरह नाज़िल करते हैं — इस अंजाम की हौसला-अफ़ज़ाई के लिए नहीं, बल्कि उसे **बा-तहज़ीब** बनाने के लिए।

और ग़ौर कीजिए सूरह को कैसे मुख़ातिब किया गया: 'या अय्युहन्-नबिय्यु' — **ऐ नबी!** — और फिर हुक्म जमा में जारी रहता है: 'जब **तुम (सब)** औरतों को तलाक़ दो...' बेटा, उलमा यहाँ हुस्न निशानदेही करते हैं: उम्मत को उसके उस्ताद के ज़रिए मुख़ातिब किया गया, गोया ये कहा जा रहा हो — ख़ास कर इस मामले में, **सबसे नरम दिल वाले की पैरवी करो, अपने ग़ुस्से की नहीं।**

ग़ुस्से में नहीं, अँधेरे में नहीं

हुक्म ख़ुद इस्लाम से पहले के दौर के ज़ुल्म को तोड़ देता है: 'उन्हें **लि-'इद्दतिहिन्न** — उनकी मुक़र्रर इद्दत के वक़्त पर — तलाक़ दो — व अह्सुल्-'इद्दह — और इद्दत को ठीक ठीक **गिनो**। और अल्लाह से डरो, जो तुम्हारा रब है।'

बेटा, इस एक हिदायत ने ज़ुल्म की एक पूरी दुनिया ख़त्म कर दी। तलाक़ आधी रात को ग़ुस्से में फेंका गया लफ़्ज़ नहीं है; इसका एक सही वक़्त और एक गिनी हुई मुद्दत-ए-इंतिज़ार है। इसे मुबहम नहीं छोड़ा जाता कि एक औरत अधर में लटकी रहे — 'इसे गिनो', रिकॉर्ड रखो।

फिर एक ऐसी हिदायत आती है जो इतनी हैरत-अंगेज़ है कि आज बहुत से लोग नहीं जानते कि ये क़ुरआन में है: 'ला तुख़्रिजूहुन्न मिम्-बुयूतिहिन्न व ला यख़्रुज्न — उन्हें उनके **घरों** से मत निकालो, न वो ख़ुद निकलें' — इद्दत के दौरान, औरत शादी वाले घर में ही रहेगी, उसका ख़र्चा दिया जाएगा, इज़्ज़त की जाएगी, उसे तंग न किया जाएगा।

इसे दोबारा पढ़िए, बेटा। तलाक़ के बीचो-बीच, मर्द को हुक्म है कि उसे घर में रखे और ख़र्चा दे। क्यों? ठीक अगली लाइन हिकमत खोलती है, और ये क़ुरआन के सबसे पुर-उम्मीद जुमलों में से एक है: 'ला तद्री ल'अल्लल्लाह युह्दिसु ब'अ्द ज़ालिक अम्रा — तुम नहीं जानते: **शायद अल्लाह उस के बाद कोई नई बात पैदा कर दे।**'

शायद दिल ठंडे हो जाएँ। शायद एक बच्चे का चेहरा एक बाप के ग़ुरूर को नरम कर दे। शायद एक ही छत के नीचे दूरी दो लोगों को याद दिला दे कि उनके पास क्या था। अल्लाह जान-बूझ कर फ़ैसले और अंजाम के दरमियान दिनों का एक रास्ता बनाते हैं, क्योंकि वो जानते हैं कि **जो कुछ हम तबाह करते हैं उसका कितना हिस्सा एक मूड में तबाह होता है।** बेटा, इसे अपनी ज़िंदगी के हर इख़्तिलाफ़ में याद रखिए — एक दोस्त, एक भाई, एक कारोबारी साथी के साथ: ग़ुस्से की घड़ी में पुल मत जलाइए।

और फिर अंजाम का अंदाज़, अगर ख़त्म होना ही हो: 'फिर जब वो अपनी मुद्दत (के क़रीब) पहुँच जाएँ, तो या तो उन्हें **अच्छे अंदाज़** से रोक लो, या **अच्छे अंदाज़** से जुदा कर दो — व अश्-हिदू ज़वय 'अद्लिम्-मिन्कुम — और अपने में से दो आदिल आदमियों को गवाह बना लो, और गवाही **अल्लाह के लिए** क़ायम करो।' बेटा, देखिए: जुदाई भी 'बिल-म'अरूफ़', अच्छे अंदाज़ से होनी चाहिए। **एक मोमिन के अंजाम उसकी शुरुआत जितने ही बा-तहज़ीब होते हैं।**

तलाक़ की सूरह में छुपे दो वादे

और अब, बेटा, वो हिस्सा आता है जो इस सूरह को हर क़िस्म की मुश्किल में मोमिनीन का महबूब बनाता है — और मैं चाहता हूँ कि आप ग़ौर करें कि ये वादे **कहाँ** रखे गए हैं।

'व मंय्-यत्तक़िल्लाह यज्'अल लहू मख़्रजा — और जो अल्लाह से **डरता** है, वो उसके लिए **निकलने का रास्ता** बना देता है — व यर्ज़ुक़्हु मिन हैसु ला यह्तसिब — और उसे **वहाँ से** रिज़्क़ देता है **जहाँ से उसे गुमान भी न हो।**'

'मख़्रज', बेटा — एक निकास, एक दीवार में एक दरवाज़ा जहाँ आपको कोई दरवाज़ा नज़र न आता था। और अल्लाह ने ये वादा कहाँ रखा? किसी कारोबार या सफ़र या जंग वाली सूरह में नहीं। उन्होंने इसे **तलाक़ के क़ानून** के बीच में रखा — सबसे उलझी हुई, दर्दनाक, बे-रास्ता लगने वाली सूरत जिसमें कोई ख़ानदान हो सकता है। गोया अल्लाह कह रहे हों: **अगर तक़वा यहाँ दरवाज़ा खोल सकता है, मेरे बंदे, तो वो कहीं भी दरवाज़ा खोल सकता है।**

और दूसरा वादा फ़ौरन आता है: 'व मंय्-यतवक्कल 'अलल्लाहि फ़-हुव हस्बुह — और जो अल्लाह पर भरोसा करता है, वो उसके लिए **काफ़ी** है। इन्नल्लाह बालिग़ु अम्रिह — बेशक अल्लाह अपना काम पूरा कर के रहेगा। क़द ज'अलल्लाहु लि-कुल्लि शै-इन क़द्रा — अल्लाह ने हर चीज़ के लिए एक **अंदाज़ा** मुक़र्रर कर रखा है।'

बेटा, तवक्कुल को ठीक समझिए, क्योंकि बहुत से लोग इस लफ़्ज़ का ग़लत इस्तेमाल करते हैं। नबी ﷺ ने हमें इसकी तस्वीर दी: अगर तुम अल्लाह पर यूँ भरोसा करो जैसा उसका हक़ है, तो वो तुम्हें वैसे रिज़्क़ दे जैसे **परिंदों** को देता है — वो सुबह भूके निकलते हैं और शाम को भरे हुए लौटते हैं। उस हदीस को ग़ौर से देखिए, बेटा: **परिंदा फिर भी उड़ता है।** वो घोंसला छोड़ता है। वो दिन भर ढूँढता है। तवक्कुल घर बैठ कर रिज़्क़ के दरवाज़ा खटखटाने का इंतिज़ार नहीं है — ये अपने परों से उड़ना है जब कि आपका दिल उस **देने वाले** से बँधा हो, खेत से नहीं।

और आख़िरी लाइन — 'अल्लाह ने हर चीज़ के लिए एक क़द्र, अंदाज़ा मुक़र्रर किया है' — इस सब के नीचे तकिया है: **आपकी राहत का वक़्त देर से नहीं, वो नापा हुआ है। ** उसका एक अपॉइंटमेंट है।

घर, उजरत, और बच्चे का दूध

फिर सूरह एक क़ाबिल-ए-ज़िक्र काम करती है, बेटा: उन बुलंद रूहानी वादों के बाद, ये सीधे एक टूटे हुए घर की **अमली तफ़सीलात** पर लौट आती है — क्योंकि असली दीन तफ़सीलात में बसता है।

'उन्हें **वहाँ** रखो जहाँ **तुम** रहते हो, अपनी हैसियत के मुताबिक़ — और उन्हें ज़ुल्म करने के लिए **तंग** मत करो।' हुक्म सिर्फ़ 'उसे एक कमरा दो' नहीं है; ये है 'अपने रहने के मेयार के मुताबिक़', और फिर ज़ुल्म के सबसे आम हथकंडे की सीधी मुमानिअत: **ज़िंदगी मुसीबत बना देना ताकि वो अपने हक़ छोड़ दे।** अल्लाह उसे नाम ले कर मना करते हैं।

'और अगर वो **हामिला** हों, तो उनपर ख़र्च करो जब तक वो अपना बोझ उतार न

दें।' कोई मर्द किसी हामिला औरत को जिसे उसने तलाक़ दी छोड़ नहीं सकता; ख़र्चा पैदाइश तक जारी रहता है। 'और अगर वो तुम्हारे लिए (बच्चे को) **दूध** पिलाएँ, तो उन्हें **उनकी उजरत दो**' — सुब्हानअल्लाह, बेटा: एक माँ अपने ही बच्चे को दूध पिला रही है, और क़ुरआन यक़ीनी बनाता है कि उसे उसकी **उजरत** मिले, अगर शादी ख़त्म हो चुकी हो। 'और आपस में अच्छे अंदाज़ से **मशवरा** करो — व'तमिरू बैनकुम बि-म'अरूफ़।'

चौदह सदियों पहले, बेटा, एक सेहराई मुआशरे में, ये नाज़िल हुआ: रिहाइश के हुक़ूक़, ख़र्चे के हुक़ूक़, हमल का सहारा, दूध पिलाने की उजरत, और एक दूसरे से जुदा होने के बाद भी अच्छे अंदाज़ से **मशवरा** करने का हुक्म। और इस सब में एक ही राग चलता है: 'और **अल्लाह से डरो**।' क्योंकि काग़ज़ और अदालतें क़वाइद नाफ़िज़ कर सकती हैं, बेटा, मगर उनकी **रूह** सिर्फ़ तक़वा नाफ़िज़ करता है।

और फिर, उस के लिए जिसके हाथ ख़ाली हों, एक रहमत: 'वुस'अत वाला अपनी वुस'अत से ख़र्च करे; और जिसका रिज़्क़ तंग कर दिया गया हो — वो उस में से ख़र्च करे जो अल्लाह ने उसे दिया। ला युकल्लिफ़ुल्लाहु नफ़्सन इल्ला मा आताहा — **अल्लाह किसी नफ़्स पर उतना ही बोझ डालता है जितना उसने उसे दिया है।**' आप से वो माँगा नहीं जाता जो आपके पास नहीं, बेटा। और फिर वो आयत जिसे इतने टूटे हुए दिलों ने तब से थामे रखा है: 'स-यज्'अलुल्लाहु ब'अ्द 'उस्रिंय्-युस्रा — **अल्लाह तंगी के बाद आसानी पैदा कर देगा।**'

तंबीह और चिराग़

फिर सूरह अपनी नज़र उठाती है और उन बस्तियों की तरफ़ इशारा करती है जिन्होंने अपने रब के हुक्म से सरकशी की: 'व कअय्यिम्-मिन क़र्यतिन 'अतत 'अन अम्रि रब्बिहा व रुसुलिही फ़-हासब्नाहा हिसाबन शदीदा — और कितनी ही बस्तियों ने अपने रब और उसके रसूलों के हुक्म से सरकशी की, तो हमने उनसे सख़्त हिसाब लिया — व 'अज़्ज़ब्नाहा 'अज़ाबन नुक्रा — और उन्हें एक ना-पसंदीदा अज़ाब दिया। फ़-ज़ाक़त वबाल अम्रिहा — तो उन्होंने अपने काम का वबाल चख लिया।'

बेटा, ग़ौर कीजिए ये तंबीह यहाँ क्यों रखी गई। क्योंकि घर के अंदर के हुक़ूक़ छोटी चीज़ें नहीं हैं। एक आदमी सोच सकता है: 'ये तो बस मेरा घरेलू मामला है।' और अल्लाह इस सिलसिले में उन क़ौमों का ज़िक्र करते हैं जो हलाक कर दी गईं — गोया ये कहा जा रहा हो: **मेरे हुक्म की ना-फ़रमानी छोटी नहीं होती, चाहे वो चार दीवारों के अंदर हो।**

और फिर, उसके फ़ौरन बाद, **चिराग़**: 'अ'अद्दल्लाहु लहुम 'अज़ाबन शदीदा — अल्लाह ने उनके लिए सख़्त अज़ाब तैयार किया — फ़त्तक़ुल्लाह या उलिल्-अल्बाब — तो **अल्लाह से डरो, ऐ अक़्ल वालो** — अल्लज़ीन आमनू — तुम जो ईमान लाए! **क़द अन्ज़लल्लाहु इलैकुम ज़िक्रा — अल्लाह ने तुम्हारी तरफ़ एक नसीहत उतार दी है — रसूलंय्-यत्लू 'अलैकुम आयातिल्लाहि मुबय्यिनात — एक रसूल जो तुम्हें अल्लाह की खुली आयतें पढ़ कर सुनाता है — लि-युख़्रिजल्-लज़ीन आमनू व 'अमिलुस्-सालिहाति मिनज़्-ज़ुलुमाति इलन्-नूर — ताकि वो ईमान वालों और नेक अमल करने वालों को अंधेरों से निकाल कर नूर की तरफ़ ले आए।'**

बेटा, यहाँ एक ख़ूबसूरत बात है: अल्लाह ने ख़ुद रसूल ﷺ को **'ज़िक्र' — नसीहत — का बदल** बना कर पेश किया, या उलमा के मुताबिक़ ज़िक्र के साथ जोड़ा। यानी किताब भी उतरी और उसे जीने वाला भी। और मक़सद साफ़: **अंधेरों से नूर की तरफ़ निकालना** — और ग़ौर कीजिए, अंधेरे जमा हैं और नूर वाहिद।

और सूरह इस पर ख़त्म होती है कि आपका रब कौन है: 'अल्लाहुल्-लज़ी ख़लक़ सब्अ समावातिंव्-व मिनल्-अर्ज़ि मिस्लहुन्न — अल्लाह वो हैं जिसने सात आसमान बनाए और ज़मीन से भी उन जैसे — यतनज़्ज़लुल्-अम्रु बैनहुन्न — उन के दरमियान हुक्म उतरता रहता है — लि-त'अ्लमू अन्नल्लाह 'अला कुल्लि शै-इन क़दीर — ताकि तुम जान लो कि अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है — व अन्नल्लाह क़द अहात बि-कुल्लि शै-इन 'इल्मा — और ये कि अल्लाह ने हर चीज़ को अपने इल्म में घेर रखा है।'

बेटा, इस इख़्तिताम की अज़मत महसूस कीजिए। एक सूरह जो एक टूटे हुए घर की तफ़सीलात से भरी है — किराया, ख़र्चा, दूध की उजरत, गवाह — वो **सात

आसमानों** पर ख़त्म होती है। क्यों? क्योंकि आपको याद दिलाना है: जो ज़ात सात आसमानों को थामे हुए है, वही आपके उस झगड़े को देख रही है। **आपके घर का सबसे छोटा ज़ुल्म भी उसके इल्म में है जिसने कहकशाएँ बनाईं।**

इस सूरह से क्या सीखा

1. इस्लाम दर्दनाक लम्हों से मुँह नहीं मोड़ता — वो उनके अंदर चल कर वहाँ इज़्ज़त का क़ानून देता है जहाँ लोग उसे खो देते हैं।

2. ग़ुस्से की घड़ी में पुल मत जलाइए: 'तुम नहीं जानते — शायद अल्लाह उसके बाद कोई नई बात पैदा कर दे।'

3. जुदाई भी 'बिल-म'अरूफ़' — एक मोमिन के अंजाम उसकी शुरूआत जितने ही बा-तहज़ीब होते हैं।

4. तक़वा का दरवाज़ा वहीं रखा गया जहाँ सबसे ज़्यादा बे-रास्ता लगता है — 'यज्'अल लहू मख़्रजा' और 'मिन हैसु ला यह्तसिब'।

5. तवक्कुल परिंदे जैसा है: वो फिर भी उड़ता है — कोशिश परों में, भरोसा दिल में।

6. ज़ुल्म का सबसे आम हथकंडा — तंग कर के हक़ छुड़वाना — क़ुरआन ने नाम ले कर मना किया।

7. क़ानून काग़ज़ से नहीं, **तक़वा** से नाफ़िज़ होता है — और सात आसमानों का मालिक आपके घर के सबसे छोटे ज़ुल्म को भी जानता है।

या अल्लाह, हमारे घरों को इज़्ज़त अता फ़रमाइए, हमारी तंगियों के बाद आसानी पैदा कीजिए, और हमें वहाँ से रिज़्क़ दीजिए जहाँ से हमें गुमान भी न हो। आमीन।